मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2021-23 /R.N.I. No. 2022007062

डकैत, हत्यारे तो पकड़े नहीं जाते, पत्रकारों को उठा लेती है पुलिस 2
मिट गया कुम्हारों के तालाब का वजूद 4
राजद्रोह क़ानून की ज़रूरत क्यों ? 5
विधि आयोग' की घोर दमनकारी सिफारिशों को देश खारिज़ करता है! 6
ज़िला शिक्षा अधिकारी मुनेश चौधरी ठेंगे पर रखती है निदेशालय को 8

वर्ष 37 | अंक 46 | फरीदाबाद | 18-24 जून 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

जीएसटी चोरों का दलाल सरगना

वादा माफ गवाह बन गया संजीव गोस्वामी

दिल्ली-मथुरा रूट पर परचून के ट्रकों की अवैध एंट्री से काली कमाई का खेल बदस्तूर जारी
सरकार को चूना लगा खुद की जेब भरने में धीरज गर्ग की तरह कई और आला अधिकारी भी हैं शामिल

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) बिना जीएसटी फरीदाबाद-होडल की सरहद से ट्रकों को पास कराने का काला धंधा बेरोकटोक जारी है। ट्रांसपोर्टरों से धन उगाही कर एडिशनल एक्साइज एंड टैक्सेशन कमिश्नर धीरज गर्ग को पहुंचाने वाला वादा माफ गवाह संजीव गोस्वामी अब दूसरे अफसरों को साध कर काली कमाई का मोटा हिस्सा ऊपर तक पहुंचा रहा है।

पैसा नहीं देने वाले ट्रांसपोर्टरों को धीरज गर्ग वाले केस में फंसाने की धमकी देकर उगाही की जा रही है। सत्तापक्ष के संरक्षण में चल रही काली कमाई के इस नेटवर्क की जानकारी सीएम फ्लाइंग से लेकर सीआईडी और विजिलेंस सबको है लेकिन कार्रवाई कोई नहीं करता।

दिल्ली से बिना जीएसटी वाला सामान लादकर उत्तर प्रदेश, बिहार, कोलकाता, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र जाने वाले ट्रकों को आबकारी एवं कराधान विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों की मदद से फरीदाबाद से होडल तक बिना रोकटोक निकलवाने का खेल लंबे समय से चल रहा है। भ्रष्टाचार और अधिकारियों की लूट कमाई के इस खेल का खुलासा जुलाई 2021 में हुआ था। मामले की विजिलेंस जांच हुई थी। जांच में सामने आया था कि संजीव गोस्वामी नाम का दलाल ट्रांसपोर्टरों से वसूली कर आबकारी एवं कराधान विभाग के एडिशनल कमिश्नर धीरज गर्ग से लेकर डीईटीओ, ईटीओ, एईटीओ आदि को प्रतिमाह पच्चीस लाख से अधिक रुपये देता था। इसके बदले उसके बताए हुए ट्रक बिना जांच के ही फरीदाबाद- होडल की सीमा से पार करा दिए जाते थे। विजिलेंस जांच में संजीव गोस्वामी वादा माफ गवाह बन गया। उसके बयान के आधार पर एडिशनल कमिश्नर धीरज गर्ग को गिरफ्तार किया गया था। तब से यह केस जांच और अदालती कार्रवाई में झूल रहा है।

इधर, वादा माफ गवाह बनने के बाद संजीव गोस्वामी और मजबूती से इस काम को अंजाम दे रहा है। इसके लिए पंचकूला में बैठे अधिकारियों को सेट किया गया है। पंचकूला में बैठी ज्वाइंट कमिश्नर कुमुद जिलों की एन्फोर्समेंट टीमों की ड्यूटी अदल बदल कर लगाती हैं यानी फरीदाबाद की एन्फोर्समेंट टीम किसी दूसरे जिले की जांच के लिए भेजी जाती है और इसी तरह दूसरे जिले की फरीदाबाद।

फरीदाबाद में चार डीटीसी, एईटीओ तैनात हैं। विभाग के भरोसेमंद सूत्रों के मुताबिक इन अधिकारियों की ड्यूटी गुड़गांव, मेवात आदि में लगाई जाती है, फरीदाबाद के मथुरा रोड पर कोई टीम

संजीव गोस्वामी

धीरज गर्ग, आईआरएस

रविन्द्र सिंह, डीटीसी

लगाई ही नहीं जाती ताकि जीएसटी चोरी कर जाने वाले ट्रकों की जांच ही न हो। खानापूरी करने के लिए एक आध टीम सरूरपुर और आईएमटी में तैनात की जाती है जहां से नाम मात्र को ही कोई ट्रक गुजरता है। साफ और ईमानदार छवि की मानी जाने वाली कुमुद मथुरा रोड पर एन्फोर्समेंट टीम की तैनाती क्यों नहीं करतीं यह प्रश्न समझ से बाहर है।

आला अधिकारियों तक मोटी रकम पहुंचाने वाला गोस्वामी उन ट्रांसपोर्टरों से भी वाहन पास कराने के नाम पर जबरन वसूली कर रहा है जो उसे पैसे नहीं देते या दो नंबर का काम नहीं करते। यही नहीं जो अधिकारी उसके ट्रक को रोकने की हिम्मत करते हैं तो उन्हें धमकी दी जाती है कि धीरज गर्ग वाले केस में तुम्हारा भी नाम लेकर फंसा दूंगा। जुलाई 2021 में पकड़ा गया अवैध उगाही का मामला धीरज गर्ग की गिरफ्तारी के बाद से ठंडे बस्ते में चला गया है लेकिन संजीव गोस्वामी अपनी नई टीम के साथ फिर से लाखों रुपये महीने की उगाही कर सरकार को जीएसटी का चूना लगा रहा है।

आका का नाम छिपा गया गोस्वामी

जिस आका के संरक्षण में संजीव गोस्वामी कई साल से लूट कमाई कर रहा था विजिलेंस जांच में उसका नाम छिपा गया। विभाग में डीईटीओ के रूप में तैनात रविंद्र सिंह पहले आरटीओ विभाग में तैनात था और सड़क पर बसों की चेकिंग करता था। विभाग के कर्मचारी बताते हैं कि संजीव गोस्वामी फरीदाबाद-आगरा रूट की बस में काम करता था। चेकिंग के दौरान दोनों की मुलाकात हुई और बिना टैक्स काटे बसें पास कराने की सेटिंग-गेटिंग का खेल शुरू हुआ। 2005 में रविंद्र सिंह की तैनाती सेल्स टैक्स विभाग फरीदाबाद में हुई। 2017-18 में जीएसटी लागू होने के बाद चेकिंग नियम में कुछ परिवर्तन हुआ। पहले केवल उन्ही जिलों में ट्रक की जांच हो सकती थी जहां से माल लादा गया है या जहां उतारा जाएगा, बीच में नहीं। जीएसटी नियमों के मुताबिक बीच में भी चेकिंग का प्रावधान कर दिया गया।

विभाग के भरोसेमंद सूत्रों के मुताबिक डीईटीओ रविंदर सिंह ने पुराने साथी संजीव गोस्वामी को बुलाया और दिल्ली के ट्रांसपोर्टरों से सेटिंग-गेटिंग करने के लिए उसे तैयार किया। इसके बाद ट्रकों को रुकवाया जाता और बातचीत के लिए ट्रांसपोर्टर को संजीव गोस्वामी का नंबर दिया जाता। जल्द ही अधिकतर ट्रांसपोर्टर संजीव को पहचान गए। संजीव इन्ही ट्रांसपोर्टरों से एक लाख से ढाई लाख रुपये प्रतिमाह तक वसूल कर करीब 25 लाख रुपये अपने आका सहित धीरज गर्ग व अन्य लोगों को पहुंचाता था। संजीव गोस्वामी ने विजिलेंस को दिए बयान में पैसा देने वाले अधिकारियों में सरोज बाला का भी नाम लिया लेकिन रविंद्र सिंह का नाम नहीं लिया। भरोसेमंद सूत्र बताते हैं कि सारा केस सरोज बाला और रविंद्र के बीच लूट कमाई के बटवारे को लेकर हुए विवाद के बाद खुला। रविंद्र सिंह संजीव गोस्वामी को सपोर्ट कर रहा था जबकि सरोजबाला सत्तापक्ष के दबंग कुलदीप तेवतिया उर्फ बप्पा और भरत तेवतिया को इस खेल में शामिल करने पर जोर दे रही थी। अपना खेल बिगड़ने से संजीव गोस्वामी सरोजबाला से नाराज था। इधर, पलवल में ट्रक पकड़े जाने पर दूसरे गुट के ही भरत तेवितया ने संजीव गोस्वामी के गुर्गे गगन मोदी बन कर एईटीओ हरीश बत्रा से बात की थी। हरीश बत्रा ने भरत तेवतिया को गोस्वामी का चेला गगन समझ कर बताया कि उसकी दी हुई 75 ट्रकों की लिस्ट में वह ट्रक नहीं शामिल है जिसे उन्होंने पकड़ा है। इस बातचीत की रिकॉर्डिंग वायरल हुई तो पेशबंदी के तौर पर डीटीसी पलवल हनीश गुप्ता ने थाना गदपुरी में इस बाबत मुकदमा दर्ज करा दिया। इसकी भनक लगते ही विजिलेंस के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने सरकार से यह केस अपने यहां ट्रांसफर करवा लिया।

संजीव के बयानों का खेल

ट्रकों से काली कमाई करने वाले संजीव गोस्वामी को वादा माफ गवाह बनाया गया लेकिन वह अपने बयानों में खेल कर गया। संजीव गोस्वामी ने अपने 161 के बयान में बताया है कि 2016-2018 के बीच एडिशनल कमिश्नर रहे विद्या सागर को वह प्रति माह दस लाख रुपये पहुंचाता था। विद्या सागर को देने के लिए बीर मेहंत और कोहली नाम के एईटीओ उससे यह धन वसूलते थे। इसके अलावा एईटीओ को तीन लाख रुपये प्रति माह, ईटीओ को एक लाख रुपये प्रति माह और टैक्सेशन इंस्पेक्टर को 25,000 रुपये देता था। 2018 में सरोजबाला फरीदाबाद की डीईटीसी को प्रति माह आठ लाख रुपये देता था। सरोज बाला ने ही संजीव गोस्वामी की मुलाकात धीरज गर्ग एडिशनल कमिश्नर एक्साइज एंड टैक्सेशन (एन्फोर्समेंट) से कराई। संजीव गोस्वामी के बयान के मुताबिक वह धीरज गर्ग को प्रतिमाह 25 लाख रुपये देता था। धीरज गर्ग के खास एक पूर्व एईटीओ आनंद मलिक की सत्ता में अच्छी पकड़ थी इसी तरह मीनू बेनीवाल की भी सत्ता के गलियारों में अच्छी पहुंच थी। संजीव गोस्वामी ने इन दोनों को भी प्रति माह पांच लाख रुपये देने की बात अपने बयान में कही है। इनके अलावा उसने एईटीओ पंकज सागर, कुशल मलिक, चमन किशोर, जितेंद्र जून और सतबीर सवरिया का भी नाम लिया है जिन्हें वह 20,000 से एक लाख रुपये प्रति माह देता था। मजिस्ट्रेट के सामने 164 के तहत दर्ज कराए अपने बयान में उसने धीरज गर्ग और सरोज बाला को खुद पैसे देने की बात कुबूल की और सुमन सिंधू को अपने गुर्गे गगन मोदी के जरिए धन पहुंचाने की बात बताई। पुलिस के सामने कुछ और, मजस्ट्रेट के सामने कुछ और बयान देकर गोस्वामी की स्थिति संदिग्ध हो चुकी है, ऐसे में क्या उसे अब भी वादा माफ गवाह समझा जा सकता है? यह एक बड़ा प्रश्न है।